ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक सुधार लाने के लिये स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में पंचायतों के स्वामित्व, जिम्मेदारी एवं पारदर्शिता बढाने हेतु प्रशिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण

दिनांक – 02–05–2017

स्थान – पंचायत समिति सभागार, भवन, सिवाना, बाडमेर (राज.)

आयोजक –प्रिया बाडमेर (राज.)

यूनिसेफ

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक सुधार लाने के लिये स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में पंचायतों के स्वामित्व, जिम्मेदारी एवं पारदर्शिता बढाने हेतु प्रशिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण

दिनांक–01.05.2017 से 02.05.2017
स्थान– पंचायत समिति सभागार, भवन, सिवाना, बाडमेर (राज.)
प्रतिभागी– सरपंच, आशा और एं.एन.एम।
प्रतिभागियों की संख्या–प्रथम दिन–25(4 सरपंच,11 आशा, 10 एं.एन.एम), द्वितीय दिन–30(7सरपंच,12 आशा,11एं.एन.एम),
समय–10.00 से 4.30
आयोजक– पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, (PRIA) व यूनिसेफ का सयुंक्त प्रयास
संचालन– ललित कुमार शर्मा, फील्ड ऐनिमेंटर, प्रिया, सिवाना।

मुख्य प्रशिक्षक

- तुलिका आचार्य, कार्यक्रम अधिकारी, प्रिया।
- भाविन टॉक, कार्यक्रम अधिकारी, प्रिया।
- सुबोध गुप्ता, कार्यक्रम अधिकारी, प्रिया।
- फिरोज खान, प्रेम कुमारी और ललित कुमार शर्मा।

विशिष्ट अतिथि–

- श्रीमति गरिमा सिहं राजपुरोहित, प्रधान, पंचायत समिति, सिवाना।
- श्री भौमसिंह इन्दा, खण्ड विकास अधिकारी, सिवाना।
- श्री आदित्य अग्निहोत्री, यूनिसेफ।

प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दु–

- प्रिया संस्था और इसके द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी ।
- कार्यक्रम का उद्देश्य एवं समाज की भूमिका।
- अपने गावं में स्वास्थ्य से संबन्धित जरूरतों के बारें में चर्चा।
- समाज में व्याप्त पुरानी परंपराये जिसके कारण मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार नहीं होना।
- वंचित समुदाय के बारे में चर्चा।
- ग्राम स्वास्थ्य,स्वच्छता एवं पोषण समिति के बारें में चर्चा।
- मातृ एवं शिशु पोषण दिवस के बारें में चर्चा
- पंचायती राज सदस्यों की भूमिका और उनकी जिम्मेदारियां।
- भविष्य की कार्ययोजना के बारें में चर्चा।

कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य–

- प्रिया और उसके द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी देना।
- मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सकेंतको में सकारात्मक सुधार का प्रयास करना।
- पंचायती राज सदस्यों के महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति अपनी जिम्मेदारियां बताना।
- पंचायती राज सदस्यों को अपने जिम्मेदारियों के प्रति और अधिक संवेदनशील और सशक्त बनाने का प्रयास करना।
- समाज में व्याप्त पुरानी कुरितियो को पहचान कर उन्हें दूर करने में समाज की भूमिका को उजागर करना।
- समाज की मुख्य धारा से दूर वचिंत समुदाय को मुख्य धारा में लाने का प्रयास करना।

भागीदारी करने वाली ग्राम पंचायतें–सिवाना, इन्द्राणा, मूठंली, थापन, देवन्दी, मोवडी, गुडा, मैली, कुशीप, और गोलिया।

कार्यक्रम के आयोजन का तरीका–

- ❖ प्रतिभागियों का समूह बनाकर परिचय करवाना।
- ❖ प्री टैस्ट लेकर उनकी जानकारी और सोच को जानना।
- ❖ ग्राम पंचायत के हिसाब से समूह बनाकर गांव का नक्शा बनाकर उसमें जरूरतमंद व वंचित वर्गो की पहचान करवाना।
- ❖ समूह बनाकर समाज में व्याप्त पुरानी कुरितियों के बारें में चर्चा करवाना तथा उनको दूर करने में उनकी भूमिका का एक चार्ट पेपर पर लिखवाना।
- ❖ पॉवर वाक के द्वारा उन लोगों के बारें में जानना जो किसी भी कारण से समाज की मुख्य धारा से वंचित रह जाते है।
- ❖ फिल्म दिखाकर प्रतिभागियों की जिम्मेदारियों के बारें में बताना।
- ❖ ग्राम पंचायत के हिसाब से समूह बनाकर अपनी अपनी जिम्मेदारियों को चार्ट पेपर पर लिखवाना।
- ❖ ग्राम स्वास्थ्य,स्वच्छता एवं पोषण समिति तथा मातृ एवं शिशु पोषण दिवस के बारें में सेशन के द्वारा बताना।

उपयोग में आने वाली सामग्री–

लैपटॉप,बैनर, पोस्टर, प्रोजेक्टर, तार(Wire),टेप(Cello, double side, paper),प्लग(Pluge),एक्सटेंशन(Extention),चार्ट पेपर, मार्कर, आदि।

प्रतिभागियों को दी जाने वाली सामग्री

पेन, नोटबुक, प्रिया प्लानर, पंचायती राज में सरपंचों की जिम्मेदारियों की पुस्तक, ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण समिति व मातृ एवं शिशु पोषण दिवस की गाईड लाईन, फाईल फोल्डर, आगामी कार्य योजना का प्लान आदि।

.....

कार्यक्रम का प्रांरम्भ

पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, (PRIA) व यूनिसेफ के सयुंक्त प्रयास से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक सुधार लाने के लिये स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में पंचायतों के स्वामित्व, जिम्मेदारी एवं पारदर्शिता बढाने हेतु प्रशिक्षकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण पंचायत समिति सिवाना के सभागार में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में सिवाना ब्लॉक की 10 ग्राम पंचायतो से जुडे जन प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

संस्था के कार्यक्रम अधिकारी सुबोध गुप्ता ने सभी का स्वागत करते हुये संस्था और संस्था के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी देने के साथ इस प्रशिक्षण के आयोजन के उद्देश्य के बारें में बताया।

"1982 से स्थापित पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, (PRIA) भारत में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के लिये एक वैश्विक केंन्द्र है। नई दिल्ली में मुख्यालय होने के साथ प्रिया अपने कार्यक्रमों को कियान्वित करने के लिये 8 राज्यो और विश्व भर में 3000 गैर सरकारी सगंठनो व विश्वविधालयों के साथ सामंजस्य स्थापित कर पंचायती राज व्यवस्था व स्थानीय सुशासन को सशक्त करने में, मातृत्व एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, कार्यस्थल पर यौन उत्पीडन व महिला हिसां और लिंगभेद के विरूद्ध, स्वच्छता और बाल अधिकार संरक्षण आदि के क्षेत्र में कार्य कर रही है। संस्था राजस्थान के 21 जिलों में UNFPA के सहयोग से पंचायतो के जैन्डर सशक्तिकरण पर कार्य कर चुकी है।

इसी क्रम में संस्था के द्वारा Unicef के सहयोग से बाडमेर के सिवाना ब्लॉक में एक कार्यक्रम शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर, बाल मृत्यु दर (विशेष रूप से बालिका) में सुधार करने के लिये पंचायती राज सदस्यों की सवेंदनशीलता को बढाने के साथ साथ उनका क्षमतावर्धन कर उनको पंचायती राज, महिला बाल विकास, स्वास्थ्य विभाग और शिक्षा विभाग कें प्रति जबाबदेह और पारदर्शी बना कर सहभागिता स्वास्थ्य विकास योजना तैयार करवाना है। जिससे मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक सुधार लाया जा सके। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह भी है कि गांव के प्रत्येक समुदाय की भागीदारी गांव के विकास में हो "– **सुबोध गुप्ता, कार्यक्रम अधिकारी, प्रिया।**

प्रधान जी के विचार– प्रशिक्षण में उपस्थित सिवाना की प्रधान श्रीमति गरिमा सिंह राजपुरोहित ने उपस्थित प्रतिभागियों के साथ अपने विचार साझा करते हुये कहा कि–

श्रीमति गरिमा सिहं ,प्रधान, सिवाना अपने विचार रखते हुये

"गांव में विकास की जिम्मेदारी जन प्रतिनिधियों के अलावा गांव के सभी लोगो की होती है। जन प्रतिनिधिओं को सडक, पानी बिजली आदि के अलावा गावं के लोगो के लिये अच्छे स्वास्थ्य और पोषण के लिये भी काम करना चाहिये। सबकी यह जिम्मेदारी होनी चाहिये कि उनके यहां इलाज के अभाव में किसी भी गर्भवती महिला या 5 साल से छोटे बच्चों की मौत न हो। जहां भी महिलायें सरपंच है उन्हे तो अपने यहा इस तरह के अभियान या बैठके आयोजित करनी चाहिये जिससे लोगों को अधिक से अधिक जानकारी मिल सके और महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार हो सके। इस प्रशिक्षण के बाद आप लोग सभी अपनी जिम्मेदारी को अच्छी तरह से समझेंगें और कार्यक्रम की सफलता के लिये आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगें। हमें समाज में महिलाओं और बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिये। जो पुरूष महिला सरपंच की जगह काम कर रहे है उन्हें चाहिये कि वो महिला का सहयोग करे उसे काम समझने में। हम सभी मिलकर गांव के विकास के लिये काम करना चाहिय।"—**श्रीमति गरिमा सिहं,प्रधान,सिवाना।**

प्रशिक्षण में उपस्थित सिवाना के **खण्ड विकास अधिकारी श्री भौम सिंह इन्दा** जी अपने संबोधन में कहा कि आज इतनी सुविधाओं के बावजूद किसी भी जच्चा और बच्चा की मृत्यु चिंता का विषय है हमें इसके बारें में गम्भीरता से सोचना होगा।

खण्ड विकास अधिकारी श्री भौम सिंह इन्दा अपने विचार रखते हुये

"सभी सरंपचो को अपने गांव की आवश्यकताओं के अनुसार ही गांव का विकास प्लान बनाना चाहिये। प्रत्यके सरंपच को इस बात का पता होना चाहिये कि उसके गांव में स्वास्थ्य और पोषण से संबन्धित क्या कमी है और उस कमी को कैसे दूर किया जा सकता है। सभी जन प्रतिनिधिओं को इस बात की कोशिश करनी चाहिये कि गांव के विकास की योजना प्रत्येक समुदाय की सक्रिय भागीदारी हो और उनकी आवश्यकता के अनुसार ही योजना बनाई जानी चाहिये। प्रिया संस्था के इस प्रयास में सहयोग करने के लिये हमे जिला कलैक्टर महोदय ने भी आदेश किया है। आप सभी लोग इनका सहयोग करे इसमें आपके साथ साथ समुदाय का भी फायदा है क्यों कि कोई भी नहीं चाहेगा कि उसके गांव किसी की भी इलाज के अभाव में मौत हो या कोई भी मिलने वाली सुविधाओं से वचिंत हो। सभी आशाओं को सरपंचों के साथ मिलकर प्रत्यके राजस्व ग्राम में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति का गठन जितना जल्दी हो जाये करवाना चाहिये और इस समिति में प्रत्यके तबके की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिये। हमें इस बात की भी कोशिश करनी चाहिये कि महिलाओं की भागादारी इस तरह की समिति में ज्यादा से ज्यादा हो "— **श्री भौम सिंह इन्दा, खण्ड विकास अधिकारी, सिवाना।**

मुख्य अतिथियों के उद्बोधन के का यह प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ। इसमें चर्चा किये जाने वाले मुख्य बिन्दूओं के बारें में चर्चा की गई। सबसे सक्रिय रूप से भागीदारी की अपील की गई ।

प्रतिभागियों का परिचय–प्रतिभागियों के परिचय के लिये सभी के पीछे एक पेपर चिपकाया गया और सभी ने पेपर पर लिखे नाम का अनुसार उसका जोडा तलाश किया। इस परिचय के दौरान सभी ने अपना साथी तलाश किया और एक दूसरे का परिचय दिया। परिचय के दौरान सभी को अपने साथी का नाम, काम, उसकी अच्छाई और एक कमी जिसे वो दूर करना चाहता है के बारें में बताया।

इस तरह के परिचय के दौरान यह भी सामने आया कि कुछ प्रतिभागी एक ही गांव के होकर भी एक दूसरे के बारें में ज्यादा नहीं जानते थे। जब भी बातें होती थी तो केवल काम की ही बातें करते थे। इस तरह एक दूसरे को जानने की कोशिश कभी नहीं की।

"हम दोनो एक ही गांव में है मेरा सरंपच होने के नाते इनसे कई बार मिलना होता है जो आज पता चला वो पहले कभी इस तरह का पता नहीं चला न कोशिश की।"–**श्रीमति रेखा, सरपंच, देवन्दी ग्राम पंचायत**

प्रशिक्षण पूर्व प्रतिभागियों का टैस्ट–

सभी प्रतिभागी टेस्ट पेपर देते हुये

इसके बाद सभी प्रतिभागियों का उनकी जानकारी तथा उनकी प्राथमिकता को समझने के लिये उनका टेस्ट लिया गया इसमे दो पेपर दिये गये एक इस कार्यक्रम से सबंन्धित और दूसरा पेपर जैन्डर को समझने के लिये जिसमें कि घर में महिला और पुरूष के कार्य विभाजन की जानकारी मागीं गई। इस पेपर के दौरान यह देखा गया कि लगभग सभी प्रतिभागियों को अपने गांव के बारें में पूरी जानकारी नहीं थी और न ही उनकी प्राथमिकतायें निर्धारित थी। जहां तक कार्य विभाजन की बात थी तो ज्यादातर प्रतिभागी इस बात पर सहमत थे कि उन्होंने इस तरह कभी सोचा ही नहीं।

"जो औरतों के काम है वो काम औरत ही करेगीं न हम कैसे उनका काम कर सकते है। उनका काम ही जल्दी जगना होता है तो हमें क्या जरूरत है जल्दी जगने की। यह हमने आज तक सोचा ही नहीं कि हमसे ज्यादा औरते काम करती है। अच्छा है आज आपने यह अहसास तो कराया कि हम आदमी लोग ही काम नहीं करते है बल्कि महिलाये हमसे ज्यादा काम करती है यह अलग बात है कि हम उस काम को गिनते नहीं है।"– **श्री मदन लाल सरपंच, नाल।**

मेरा योगदान–

इस सत्र के अन्दर सभी प्रतिभागियों को अपने बचपन से अब तक की सभी घटनाओं को याद करने और सोचने के लिये कहा गया कि उनको कब जीवन के सबसे कठिन दौर से गुजरना पडा था और उन्होंने उसका सामना कैसे किया या उन्होंने कौन–कौनसे कदम उठायें। उस कठिन दौर से उन्होने क्या सीखा। इसके लिये सभी को समूहों में बॉटा गया और अब वे सब अपने–अपने समूह मे वो घटना सुना कर और चर्चा की गई कि क्या कदम उठाया जा सकता था जो और अधिक उपयुक्त हो सकते थे।

इसके बाद सभी समूहों में से एक एक कहानी को चुन कर सुनाया गया।

"मुश्किल समय में सही निर्णय लेकर या सही कदम उठाकर उस मुश्किल समय से बाहर निकल सकते हैं। जरूरत है उस मुश्किल समय को पहचान कर उससे बाहर निकलने के रास्तों / संसाधनों व व्यक्तियों की पहचान कर ढूंढना और उनको साथ लेकर चलना ताकि हम आसानी से उन समस्याओं से बाहर आ सके। और जब हम उस दौर को याद करें तो हमें गर्व महसूस हो। समस्यायें सबके जीवन मे आती है जो लोग अपनी बात को किसी कारण से यहां नहीं रख पाये है उन्हें अपनी बात को कहने की हिम्मत रखनी चाहिये। जिससे और दूसरे लोगों को भी सीखने को मिले।"– **तुलिका आचार्य, कार्यक्रम अधिकारी, प्रिया**

कैसा है मेरा गांव–

इसके लिये सभी प्रतिभागियों को ग्राम पंचायत के हिसाब से समूह में बनाकर उन्हें एक–एक चार्ट पेपर दिया गया और अपने गांव का भौगोलिक व सामाजिक नक्शा बनाने के लिये कहा गया। उन्हें इस नक्शे में नदी, नाले, पहाड़, आंगनबाड़ी केन्द्र, उप–स्वास्थ्य केन्द्र ,आशा सहयोगिनी का घर/मौहल्ला, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का घर/मौहल्ला, स्कूल,गांव में ऐसे क्षेत्र जहां पर लोग खूले में शौच जाते हैं ,गांव में एस.सी. /एस.टी. जाति के बाहुल्य वाला क्षेत्र , क्षेत्र जहां पर मातृ मृत्यू शिशु मृत्यू अधिक हुई हो, जहां पर घरेलू प्रसव अधिक होते हैं दिखाने के लिये कहा गया।

गांव का नक्शा बनाते हुये प्रतिभागी

अवलोकन– आशाओं ने सरपंचो की इस काम में मदद की। बहुत सारे लोगों को इस बारें में जानकारी नही नहीं थी कि उनके गांव में किस जगह क्या परेशानी है? सबने अपने अपने जानकारी के हिसाब से नक्शा बनाया और उसे दीवार पर प्रदर्शित किया।

सामाजिक कुरीतियां और उनसे होने वाली हानियां–

इस पर चर्चा के दौरान सभी को 5 समूहों में विभाजित कर उन्हें एक –एक काल्पनिक कहानी दी गई और उसके हिसाब से कुरीतियों पर चर्चा करने के लिये कहा गया। उन्हें समाज में व्याप्त इन कुरीतियों को एक चार्ट पेपर पर लिखने, उनसे होने वाली हानियों तथा उन्हें दूर करने के लिये प्रतिभागियों की भूमिका के बारें में लिखने के लिये कहा गया। उसके बाद प्रत्येक समूह के द्वारा उस चार्ट को प्रदर्शित करवाया गया और इन कुरीतिओं पर चर्चा की गई।

इस चर्चा के दौरान लडकों को टीके न लगवाना, पैसों की वजह से लडकियों के टीके लगवाना, गर्भवती महिला की जांच न करवाना, अस्पताल से आते ही नहलाना, पहला दूध न पिलाना आदि परंपराये सामने आई। इस दौरान यह भी बात निकल कर सामने आई कि जानकारी का अभाव भी इन कुरीतिओं को दूर नहीं होने देता है।

"हमें सभी लोगों को मिलकर इस तरह की बातों को दूर करने का प्रयास करना चाहिये हमें अपने गांव में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित करना चाहिये और यह प्रयास करना चाहिये कि सभी समुदाय के लोग उसमें भाग ले। सभी आशाओं को इस तरह की जानकारी समय– समय पर स्थानीय सरपंच और गांव के अन्य लोगों से इस बारें में मदद लेनी चाहिये।"– **श्री मदाराम देवासी, सरपंच, गोलिया।**

इसके बाद सभी से अगले दिन समय पर आने के लिये कह कर तथा द्वितीय दिन के बारें में सक्षिप्त जानकारी देकर प्रथम दिन के प्रशिक्षण का समापन कर दिया गया।

प्रशिक्षण का द्वितीय दिन

कुछ प्रतिभागी जो प्रथम दिन नहीं आ पाये थे वो दूसरे दिन इस प्रशिक्षण में पहुॅचे। प्रथम दिन के बारे सक्षिंप्त जानकारी सभी को दी गई। और दूसरे दिन होने वाले बिन्दुओं पर भी चर्चा की गई।

पॉवर वॉक के द्वारा वंचित समुदाय के बारे में जानकारी

सभी प्रतिभागियों को समाज में उपेक्षित और वचिंत समुदाय के बारें में जानकारी प्राप्त करने और समाज की मुख्य धारा से अलग समुदाय की स्थिति को समझाने के लिये पावॅर वॉक के माध्यम से प्रयास किया गया।

पहले से तैयार पर्चियों जिन पर किशोर बालक, किशोरी बालिका, बीपीएल परिवार की बहू, एस.सी/एस.टी परिवार की बहू, महिला सरपंच, पुरूष सरपंच, अध्यापिका,अध्यापक .

आंगनबाडी कार्यकर्ता, एड्स से पीडित महिला, पुरूष वॉर्डपंच,.विधवा महिला, गर्भवती महिला,महिला वॉर्डपंच,.धात्री महिला, शिशु (20 दिन का), 24 माह के बच्चे की माता, साथिन, आशा ,एएनएम,.वीएचएससी सदस्य आदि शब्द लिखे हों प्रतिभागियों को बांटी गई। सभी प्रतिभागी पर्ची वाली भूमिका में अपने आप को रखकर सोचें कि क्या वो निर्णय लेने में सक्षम है। इसके बाद सभी प्रतिभागियों को एक पंक्ति में खडा किया गया और उनके सामने कुछ कथन पढ कर सुनाये गये। जो सहमत थे वो पंक्ति में से एक कदम आगे की ओर बढे।

इसके विपरीत जो प्रतिभागी सहमत न हो एवं कथनो को अपने ऊपर लागू किया हुआ न मानते हो वे एक कदम पीछे की ओर चले गये एवं जो प्रतिभागी निर्णय न ले सकें वे अपने स्थान पर ही खडे रहे। इस दौरान प्रतिभागियों ने यह जाना कि किस तरह का समुदाय या लोग समाज की मुख्य धारा से अलग हो जाते है या कटे हुये रहते है। यह भी समझा गया कि इनके साथ किस तरह के सहयोग करने की जरूरत है।

"सभी लोग साथ चले पर जब बाद मे पीछे मुड के देखा तो बहुत सारे लोग पीछे रह गये। जबकि यह नहीं होना था। हम सबको इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि हम समाज के हर तबके को साथ लेकर चले और किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। "– **सुश्री रेखा, सरपंच, गुडा**

"आपने सभी ने देखा कि जो लोग आगे बढे वो किसी न किसी प्रकार से सपंन्न थे या उनके हाथ मे किसी न किसी प्रकार से सत्ता थी जो कि उनके आगे बढने में सहायक रही। जो लोग पीछे रह गये वो किसी न किसी तरह से समाज से कटे हुये लोग थे जिन्हें साथ लेकर चलने की जरूरत है। यह भी देखा गया कि यही वो लोग है जो पूरी तरह से सेवाओं का लाभ नहीं उठा पाते है और पीछे रह जाते है। हमें अपने यहां बस इसी बात को ध्यान में रखना है कि समाज का कोई भी वर्ग इस तरह से अलग थलग न पडे और सभी को सारी सुविधाओं का लाभ मिले । हमारे समाज में भी अधिकतर किशोरियों और महिलाओं की यही समस्या है कि उनसे संबंधित निर्णय उनके घर के पुरूष लेते है, उनकी राय को परिवार एवं समाज में महत्व नहीं दिया जाता है। उन्हें अच्छा पौष्टिक खाना, स्वास्थ्य

सेवाएं, उच्च शिक्षा आदि से वंचित रखा जाता है। लड़कियों की शादी कम उम्र मे कर दी जाती है और वो कम उम्र मे मां बन जाती है। यह चक्र पीढी दर पीढी चलता रहता है। अतः इस चक्र को समाप्त करने के लिए आवश्यकता है कि समाज में वो लोग जो अधिकार युक्त है अपनी जिम्मेदारियों को पहचाने और उन लोगों को साथ लेकर आगे बढ़े जो पीछे छूट गये है। साथ ही पीछे छूटे व्यक्तियों को अपनी शक्ति पहचानने की आवश्यकता है और समाज में आगे बढने के लिए अवसर तलाशने एवं प्रयासरत रहने की जरूरत है।"**—भाविन टॉक, कार्यक्रम अधिकारी, प्रिया**

हम देखेगें कि अधिकतर कथनों में वे व्यक्ति जो निर्णय लेने में सक्षम है और जिनके पास शक्ति है वे अपने कदम आगे लेते जा रहे है जबकि जिनके पास निर्णय क्षमता और शक्ति का अभाव है वे अपने स्थान से पीछे चले गये अथवा अपने स्थान पर ही खडे है।

इसके बाद यूनिसेफ से आये **श्री आदित्य अग्निहोत्री** ने अपने विचार और अनुभव प्रतिभागियों के साथ साझा किया। उन्होनें यूनिसेफ के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों के बारें में जानकारी देते हुये ई— जन स्वास्थ्य के बारें में भी बताया। उन्होनें मातृ एवं शिशु पोषण दिवस के बारें में जानकारी देते हुये जन प्रतिनिधियों की भूमिका के बारें में बताया।

यूनिसेफ के श्री आदित्य अपनी बात रखते हुये

"सरपंचों को चाहियें कि वो इस तरह के आयोजनों में अपनी भूमिका को समझते हुये इनमें अपनी सक्रिय भागीदारी निभायें। मातृ एवं शिशु पोषण दिवस के आयोजन में सबसे बडी बात है समुदाय और जरूरतमदं लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करना। गांव के मुखिया होने के नाते आपकी जिम्मेदारी है कि आप इस तरह के कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिये आशा और एं.एन.एम का सहयोग करे। जिससे इस दिन मिलने वाली सुविधाओं का लाभ वंचित और जरूरतमंद को मिल सके। उन्होंने कहा कि सरपंच इस तरह के कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुये आवश्यक कमिओं को दूर करने का प्रयास करे। सभी लोग इस तरह के आयोजनों में अगर अपनी भागीदारी निभायेंगें तो हम महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण के स्तर को सुधार सकेंगें। हम सभी को मातृ एवं शिशु के स्वास्थ्य के सुधार में अपनी भूमिका को समझना होगा यह किसी एक की जिम्मेदारी नहीं है। जनप्रतिनिधीओं पर इसकी जिम्मेदारी ज्यादा है कि वो यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि उनके यहां कोई भी ईलाज के अभाव में न मरे।"— **श्री आदित्य अग्निहोत्री, यूनिसेफ**

इसके बाद सभी प्रतिभागियों को ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण समिति के बारें में जानकारी दी गई।

ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण समिति

सभी प्रतिभागियों को इसके बारें में जानकारी देते हुये इस समिति के महत्व को बताया गया। इस दौरान यह भी पता चला कि 10 ग्राम पंचायतों में से केवल एक में ही यह समिति बनी हुई है जो कि प्रिया के हस्तक्षेप से बनी थी। सभी को इस समिति के गठन के प्रक्रिया को समझाया गया और विशेष रूप से आशा की भूमिका के बारें में चर्चा की गई। सभी को दी गई गाईडलाईन पढने को कहा गया और इससे सबंधित सभी सवालों के जबाब दिये गये। इस बात को भी कहा गया जितनी जल्दी हो सभी अपनी अपनी ग्राम पंचायत में इसका गठन करे। इसके गठन में सरपंचों को भी कहा गया कि वो आशा का पूर्ण सहयोग कर सहयोग करने वाले सदस्य चुने।

हमारी जिम्मेदारियां

इसके बाद सभी प्रतिभागियों को उन्हें उनकी जिम्मेदारी के प्रति सवेंदनशील और सशक्त बनाने के लिये एक फिल्म दिखाई गई जिसमें मातृ एवं शिशु पोषण दिवस के दिन सभी की भूमिका को दिखाया गया। इस फिल्म देखने के बाद सभी प्रतिभागियों को ग्राम पंचायत के हिसाब से समूह में बॉट कर एक एक चार्ट पेपर दिया गया और उन्हें अपनी अपनी जिम्मेदारी लिखने को कहा गया। प्रत्येक समूह में आशा, सरपंच और एंन.एम को रखा गया।

प्रतिभागियों के विचार–

"यह प्रयास सराहनीय है। हमें इस बात का प्रयास करना होगा कि हमारे अपने गांवों में किसी भी महिला और बच्चे की मौत न हो और कोई भी समुदाय मिलने वाली सुविधाओं से वचिंत न रहे। हम लोग आपके साथ सहयोग करने को तैयार है। आने वाले दिनों में हम अपनी अपनी पंचायतों में इस तरह के प्रशिक्षण जल्दी से जल्दी आयोजित कर गावं के विकास के प्लान में सभी की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगें। हम आपके सहयोग से अपने गांव को निरोग बनाने के लिये काम करेंगें। अगर ग्राम पंचायत स्तर पर यह प्रशिक्षण दो दिन की जगह एक ही दिन का हो तो ज्यादा बेहतर होगा। हमें अपने अपने गावों में बहुत ही जल्दी ग्राम स्वास्थ्य,स्वच्छता एवं पोषण समिति का गठन करेंगें। हम पूर्णतः आपके साथ है।"– **श्री मूलचंद धायल, सरपंच, मोवडी।**

"सभी सत्र अच्छे थे पर जिसमें आपने हमारे बुरे दिनों के बारें में पूछा तो वो हमें सही नहीं लगा क्यों कि हम नहीं चाहते कि हमारी परेशानी सभी के सामने आये और हमारी बात

सब जगह फैले। कोई भी अपने बुरे दिनों के बारें में या मुश्किल भरे दिनों के बारें में नही याद करना चाहेगा। जो गुजर गया उसके बारें मे या सोचना इसलिये आप इसे हटा दे।"

समापन– प्रतिभागियों से आगामी कार्य योजना का प्लान बनवाया गया। उनके सुझाव भी जाने गये। इसके बाद किराया वितरण कर इस दो दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया।

अवलोकन– पहले दिन राजस्थान मुख्यमन्त्री के आने के कारण सरपंच आ नहीं पाये। इस प्रशिक्षण के दौरान यह भी सामने आया कि महिला सरपंच बहुत अधिक न तो बोल रही थी न ही सहयोग कर रही थी क्यों कि वास्तविकता में उनके पति काम को देखते थे। प्रधान और विकास अधिकारी के कारण हम उनके पतिओं को नहीं बुला पाये थे। कुछ महिला सरपंचों की भागीदारी बहुत अच्छी रही। हमें सभी ग्राम पंचायतों में अपने खुद की पहचान स्थापित करनी होगी तब जाकर हम अपने मकसद में सफल हो पायेंगें। यह भी बार बार सामने आया कि इस प्रशिक्षण को दो दिन की जगह एक ही दिन का होना चाहिये। ब्लॉक लेवल से अच्छा सहयोग मिला पर वो भी पूरी तरह सरपंचो को इस प्रशिक्षण में आने के लिये तैयार नहीं कर सके। कुछ आशा और एं.एन.एम अपनी राजनैतिक पहुॅच के कारण इस दोनो दिन के प्रशिक्षण के दौरान गंभीर नहीं दिखाई दी। हमें बहुत ही जल्दी ग्राम पंचायत स्तर पर अगले स्तर का प्रशिक्षण आयोजित करना होगा जिससे सभी को याद रहे और सब अपने योगदान को समझ सके। प्रधान महिलाओं के लिये कुछ करना चाहती है पर महिला सरपंच उनके बुलाने पर भी नही आ पाती क्योंकि उनके पति उन्हें नहीं भेजते है।

दो दिवसीय प्रशिक्षण का विवरण
प्रथम दिन

समय	सेशन
सुबह 10.00 से 10.20	रजिस्ट्रेशन
10.20 से 11.00	प्रतिभागियों का परिचय
11.00 से 11.20	चाय व अल्पाहार
11.20 से 12.30	उद्‌बोधन
12.30 से 1.00	प्री टेस्ट
1.00 से 2.00	मेरा योगदान
2.00 से 2.40	भोजन
2.40 से 3.20	मेरा गांव
3.20 से 4.30	समाजिक पंरपराये और उनका निदान

द्वितीय दिन

समय	सेशन
सुबह 10.30 से 11.00	पहले दिन का अवलोकन
11.00 से 11.20	चाय व अल्पाहार
11.20 से 12.10	स्वास्थ्य विकास में मेरी भूमिका
12.10 से 01.00	परिवर्तन लाने में मेरी भूमिका

01.00 से 2.00	मेरी जिम्मेदारियां
2.00 से 2.40	भोजन
2.40 से 3.20	मेरा सपना
3.20 से 4.00	मेरा सपनों का गांव
4.00 से 4.30	पोस्ट टेस्ट व किराया वितरण

फोटो गैलरी

दो दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

सिवाना @ पत्रिका . कस्बे के पंचायत समिति सभागार में सोमवार को प्रिया संस्था के तत्वाधान में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक सुधार, बेहतर स्वास्थ्य और पोषण के लिए पंचायती राज सदस्य को संवेदनशील, जवाबदेह और पारदर्शी बनाने के लिए दस ब्लॉक का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ।

इसमें जनप्रतिनिधि, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व आशा सहयोगिनियों ने भाग लिया। प्रधान गरिमा राजपुरोहित ने कहा कि जनप्रतिनिधि ईमानदारी से जिम्मेदारी निभाएं। शिशु मृत्यु दर रोकने के लिए गर्भवती महिलाओं को अच्छे खान-पान व समय पर स्वास्थ्य जांच करवाने की जानकारी दें। ब्लॉक विकास अधिकारी भोमसिंह इंदा ने कहा कि गर्भवती महिलाओं ओर छोटे बच्चों की असामयिक मौत को रोकने के लिए सभी के प्रयासों की जरूरत है। आमजन को स्वास्थ्य से स्वास्थ्य से संबंध में जानकारियां दें। इसके वे रोग का उपचार समय पर करवाएं। प्रिया कार्यक्रम अधिकारी सुबोध गुप्ता ने बताया कि इस परीक्षण का उद्देश्य मातृ, शिशु व बाल मृत्यु दर में सुधार के लिए पंचायती राज सदस्यों को संवेदनशील बनाने के साथ क्षमतावर्धन करना है। इससे मातृ एव शिशु स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार लाया जा सके। प्रशिक्षण में दस ग्राम पंचायतों के सरपंच, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी व महिला स्वास्थय कर्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर भाविन टॉक, तुलिका आचार्य, ललित शर्मा, फिरोज खान उपस्थित थे। *निप्र*

प्रत्येक तबके को कर योजनाओं से लाभान्वित

दो दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

सिवाना @ पत्रिका . स्थानीय पंचायत समिति सभागार में प्रिया संस्थान के तत्वाधान में यूनिसेफ के सहयोग से आयोजित मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक सुधार के लिए पंचायती राज सदस्य का दो दिवसीय प्रशिक्षण मंगलवार को सम्पन्न हुआ। इसमें दस ग्राम पंचायतों के सरपंच, आशा सहयोगीनी व महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रिया संस्थान कार्यक्रम अधिकारी सुबोध गुप्ता ने कहा कि दी गई जानकारियां आमजन तक पहुंचाएं। जनप्रतिनिधि प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर ग्राम स्वच्छता, स्वास्थ्य व पोषण समिति का गठन करें। वहीं उद्देश्य अनुसार कार्य करें। यूनिसेफ अधिकारी आदित्य अग्निहोत्री ने कहा कि जन प्रतिनिधि व स्वास्थ्य कार्यकर्ता समाज के प्रत्येक तबके को योजनाओं से लाभान्वित करें। गर्भवती महिलाओं को सरकारी सुविधाएं उपलब्ध करवाएं। इस अवसर पर सरपंच मूलसिंह भायल मवड़ी, मदनलाल मेघवाल, रेखा मेघवाल, मादाराम देवासी सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि व कर्मचारी मौजूद थे।